31

राज्य का बीज बोना

(13:1–23)

बोने वाले का यह दृष्टांत यीशु की सेवकाई का निर्णायक मोड़ साबित हुआ।

दृष्टांत-इसकी बातें (13:1-9)

**1उसी दिन यीशु घर से निकलकर झील के किनारे जा बैठा। 2और उसके पास ऐसी
बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई कि वह नाव पर चढ़ गया, और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही।
3और उस ने उनसे दृष्टान्तों में बहुत सी बातें कहीं: एक बोने वाला बीज बोने निकला।
4बोते समय कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और पक्षियों ने आकर उन्हें चुग लिया। 5कुछ
पथरीली भूमि पर गिरे, जहां उन्हें बहुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने के
कारण वे जल्द उग आए। 6पर सूरज निकलने पर वे जल गए, और जड़ न पकड़ने के
कारण सूख गए। 7कुछ बीज झाड़ियों में गिरे और झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा डाला।
8पर कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे, और फल लाए, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई
तीस गुना। 9जिस के कान हों वह सुन ले।''**

आयतें 1, 2. ये आरम्भिक आयतें अध्याय के कई दृष्टांतों का आधार हैं। **यीशु** कफरनहूम के **घर** से निकल गया, जहां उस ने ''भीड़ से बातें'' कीं (12:46), और **झील के किनारे** चला गया। कफ़रनहूम गलील की झील के बिल्कुल किनारे पर है। यहां शायद वह एक बार में और अधिक लोगों से बात करने के लिए खड़ा था। उसके किनारे पर खड़े होने पर **उसके पास बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई।** यीशु ने उस इलाके के कई नगरों और गांवों में प्रचार किया था (लूका 8:1)। इस समय यहां पर, लूका ने कहा कि ''बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई ... नगर-नगर'' से (लूका 8:4; NKJV) लोग उसके पास आ पहुंचे थे।

भीड़ का दबाव इतना अधिक था कि यीशु एक छोटी **नाव** पर चला गया। किनारे से थोड़ी आगे निकलने पर स्थिति एक स्वाभाविक मंच की तरह बन गई, जिससे उसे **किनारे पर खड़ी** भीड़ के सब लोगों को सुनना आसान हो गया। इस प्रवचन के परम्परागत स्थान को ''दृष्टांतों की खाड़ी'' कहा जाता है।[1] इस खाड़ी के केन्द्र से किसी के बोलने पर कई हज़ार लोग उसे सुन सकते थे। नाव ने भी एक प्रकार के पुलपिट का काम किया, जहां से यीशु ने बातें कीं। यहूदी रब्बियों की रीति के अनुसार वह सिखाने के लिए **जा बैठा** (5:1; 15:29; 24:3; 26:55)।

आयत 3. आरम्भ करते हुए यीशु ने **उनसे दृष्टांतों में बहुत-सी बातें कहीं**। मसीह ने सिखाने के इस ढंग का इस्तेमाल चाहे पिछले अवसरों पर किया था पर मत्ती ने यहां पहली बार इसे ''दृष्टांत'' कहा। यीशु द्वारा दिया पहला ''राज्य का दृष्टांत'' **बोने वाले** का दृष्टांत ही था।

सुसमाचार के तीनों सहदर्शी विवरणों (मत्ती 13; मरकुस 4; लूका 8) में यह मिलता है। दृष्टांत बताते समय यीशु उन दृश्यों का वर्णन करता था, जिनसे उसे सुनने वाले परिचित हों, विशेषकर खेती और चरागाहों के रूपकों का इस्तेमाल करते हुए।

"बोने वाला" **बीज बोने निकला**। वह उस नगर या गांव से बाहर निकला, जहां वह रहता था और आसपास की भूमि के एक खेत में बीज बोने के लिए निकला। बोने वाले आमतौर पर सुबह जल्दी निकल जाते, दिनभर काम करते और शाम के समय शहरपनाह के भीतर अपने घरों में सुरक्षित लौट आते थे (न्यायियों 19:16-21; रूत 2:2, 17, 18)। गेहूं की बुआई नवम्बर/दिसम्बर में और कटाई अप्रैल/मई में होती थी।

किसान अपने बीज को "बिखेरने" के ढंग से बोते थे। वे अपने कंधों पर लटका बीज का थैला लेकर खेतों में घूमते हुए चलते-चलते बीज की मुट्ठी भरकर उसे हवा में फैंक देते थे। इस ढंग से बोते समय यह पता चलने का कोई तरीका नहीं था कि बीज कहां गिरेगा। किसान को इतना मालूम होता था कि उपजाऊ भूमि में इतना बीज गिर गया है, जिससे वह उपज दे सके। सही परिस्थितियां होने पर यह बढ़ता और उसके लिए अच्छी फसल देता था। इस दृष्टांत में बोने वाला और बीज स्थिर हैं, जबकि भूमि की किस्में अलग-अलग हैं।

आयत 4. यीशु ने पहले **मार्ग के किनारे गिरे** बीज की बात की। अनुवादित शब्द "मार्ग" का यूनानी शब्द (*hodos*) "मार्ग" के अर्थ वाला एक सामान्य शब्द है। इसका अर्थ "राजमार्ग," "सड़क," या "रास्ता" हो सकता है। वर्तमान संदर्भ में यह हवाला "रास्ता" प्रतीत होता है (NIV; NRSV)। फलस्तीन में आमतौर पर दाख की बारियों की रक्षा चाहे पत्थर की दीवारों या बाड़ों के साथ की जाती थी (गिनती 22:24; नीतिवचन 24:30, 31; यशायाह 5:5), पर अनाज के खेतों में बाड़ें नहीं लगाई जाती थीं (देखें 12:1)। इसके बजाय उन्हें छोटी पगडंडियों के द्वारा अलग किया जाता था और उनकी सीमाएं पत्थर लगाकर तय की जाती थीं (व्यवस्थाविवरण 19:14; 27:17; अय्यूब 24:2; नीतिवचन 22:28; 23:10)। ये पगडंडियां कई-कई साल तक रहती थीं। इसलिए उनके किनारे की ज़मीन इतनी कठोर हो जाती कि उस में बीज नहीं धंस सकता था। वहां गिरा बीज ज़मीन के ऊपर पड़ा रहता था, जिस कारण वह आसानी से **पक्षियों** का चारा बन जाता था। वे किसान द्वारा इसे बचा पाने और उपजाऊ भूमि में डालने से पहले ही खा जाते थे।

आयतें 5, 6. दूसरा, कुछ बीज **पथरीली भूमि पर गिरे**। फलस्तीन में यह बहुत ही आम बात थी। बहुत से इलाकों में भूमि के कुछ-कुछ इंचों पर चूना-पत्थर की चट्टान की परतें पड़ी होती थीं। मसीह के समय में, यरदन नदी और गलील की झील के साथ-साथ के कुछ मैदानी और स्पाट स्थानों को छोड़, बड़ी फसल उगाने के लिए ज़मीन ढूंढ़ना कठिन होता होगा।

भूमि इतनी सख्त थी कि पौधे जल्दी से **उग आए**। परन्तु **सूरज** निकलने के बाद वे गर्मी से **जल गए**। ऐसे पौधे के पत्ते पहले तो स्वस्थ और मज़बूत लगते होंगे; परन्तु जड़ों में पानी और खुराक पहुंचाने का अच्छा प्रबन्ध न होने के कारण जल्दी ही मुरझाकर सूख जाते। लूका 8:6 कहता है कि "नमी न मिलने से सूख गया।"

आयत 7. तीसरा, कुछ बीज **झाड़ियों में गिरे** (देखें अय्यूब 31:40; यिर्मयाह 4:3; मत्ती 7:16; इब्रानियों 6:8)। "झाड़ियों" के लिए यहां यूनानी शब्द (*akantha*) का अर्थ "कांटेदार

पौधे'' है। बीज ने खेत के उसी भाग ने जड़ पकड़ ली, जहां झाड़ियां अपने आप उग आई थीं। झाड़ियों वाले पौधे आज की तरह ही उस समय भी बड़ी तेज़ी से बढ़ते थे। छोटे से खेत को साफ़ करने के लिए बड़ी परेशानी उठानी पड़ती होगी; परन्तु यदि खेत पर ध्यान न दिया जाए तो झाड़ियां पौधों से बड़ी हो जाती हैं (नीतिवचन 24:30-34)। खेत को साफ़ करने के लिए झाड़ियों को केवल काटना ही नहीं, बल्कि उन्हें जड़ से उखाड़ना भी आवश्यक होता था। यदि उन्हें लताड़ दिया जाता तो वे जल्दी से फिर उग आती थीं। यहां पर अच्छे पौधे झाड़ियों के साथ उग आए थे और अन्त में **झाड़ियों ने उन्हें दबा डाला ...** था। पर्याप्त खुराक, सूर्य की रौशनी और हवा न मिलने के कारण अच्छे पौधे सूख गए।

आयत 8. चौथा, यीशु की कहानी वाले **कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे, और फल लाए, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना**। क्रेग एस. कीनर के अनुसार उस इलाके में फसल औसत बोए गए बीज के साढ़े सात से लेकर दस गुणा तक होती थी।[2] इस गणना से, मसीह द्वारा बताए गए विभिन्न खेतों की उपज आश्चर्यकर्म नहीं तो असाधारण अवश्य रही होगी।[3] पुरखाओं के युग में, परमेश्वर द्वारा आशीष पाया हुआ होने के कारण इसहाक ने सौ गुणा फसल काटी थी (उत्पत्ति 26:12)। बाद के यहूदी लेख ऐसी ही उपज की बात लिखते हैं।[4] यहां पर बहुतायत की फसल बंजर भूमि पर बर्बाद किए गए किसी भी बीज के मुआवज़े से बढ़कर होगी।

आयत 9. यीशु ने ''**जिसके कान हों वह सुने ले**'' कहते हुए समाप्त किया (11:15 पर टिप्पणियां देखें)। वह दृष्टांत को सुनने वालों को इसका अर्थ समझाना चाहता था। आयत 43 में यही ताड़ना दोहराई गई है। 13:18-23 में यीशु ने इस दृष्टांत का अर्थ बताया।

दृष्टांत-इसका उद्देश्य (13:10-17)

10चेलों ने पास आकर उससे कहा, ''तू लोगों से दृष्टान्तों में क्यों बातें करता है?''
11उस ने उत्तर दिया, ''तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर उनको नहीं।
12क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा, और उसके पास बहुत हो जाएगा; पर जिस के पास कुछ नहीं है, उससे जो कुछ उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा। 13मैं उनसे दृष्टातों में इसलिए बातें करता हूं कि वे देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए नहीं सुनते, और नहीं समझते। 14उनके विषय में यशायाह की यह भविष्यवाणी पूरी होती है:

'तुम कानों से तो सुनोगे पर समझोगे नहीं;
और आंखों से तो देखोगे, पर तुम्हें न सूझेगा।
15क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है,
और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं
और उन्होंने अपनी आंखें मूंद ली हैं;
कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें,
और कानों से सुनें
और मन से समझें और फिर जाएं,

मैं उन्हें चंगा करूं।'

[16]**पर धन्य हैं तुम्हारी आंखें, कि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं।**
[17]**क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं कि बहुत भविष्यवक्ताओं ने और धर्मियों ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो, देखें, पर न देखीं; और जो बातें तुम सुनते हो, सुनें, पर न सुनीं।''**

आयत 10. बाद में **चेलों ने** यीशु के पास जाकर पूछा, ''**तू लोगों से दृष्टांतों में क्यों बातें करता है**?'' चेलों ने यीशु से यह प्रश्न तब पूछा होगा, जब वह घर में था (13:36)। मरकुस 4:10 कहता है कि ''जब वह अकेला रह गया'' तो उसके चेलों ने उससे दृष्टांत के बारे में बात की।

यीशु पहले भी दृष्टांतों का इस्तेमाल करता था: पर इतना नहीं जितना उस ने यहां पर किया। चेलों को सिखाने के उसके ढंग में अन्तर का पता चल गया और वे इससे उलझन में पड़ गए। उनके प्रश्न से यह संकेत मिलता है कि यीशु के दृष्टांतों को हर बार समझना आसान नहीं होता था।

आयत 11. प्रभु ने उत्तर दिया, ''**तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर उनको नहीं**।'' दानिय्येल 2 में ''भेद'' और ''राज्य'' शब्द इकट्ठे मिलते हैं, जहां भविष्यवक्ता परमेश्वर के अनादि राज्य के आने की भविष्यवाणी करता है (दानिय्येल 2:18, 19, 22, 23, 27, 30, 44, 47)। यूनानी शब्द (*mustērion*) जिसका अनुवाद ''भेद'' हुआ है। किसी ऐसी चीज़ की बात करता है, जो पहले छिपी हुई थी पर अब प्रकट हो चुकी है। और स्पष्ट कहें तो यह मसीह के बलिदान और उस की कलीसिया की स्थापना के द्वारा मनुष्यजाति (यहूदियों और अन्यजातियों दोनों) को बचाने की परमेश्वर की योजना के पीछे के दृश्यों का संकेत है (रोमियों 16:25, 26; इफिसियों 3:4-12; कुलुस्सियों 1:25-27)।

''राज्य के भेदों'' का प्रकाशन परमेश्वर के अनुग्रह के कारण था। परन्तु यीशु की बातों की ओर ध्यान न देने को तैयार लोगों ने उन्हें समझने के लिए अपने अवसर को भुला दिया। चेलों का मानना था कि यीशु ही वह मसीहा है, जो राज्य को स्थापित करने के लिए आया था, इस कारण वह उसके दृष्टांतों को अच्छी तरह से समझ पा रहे थे।

आयत 12. अपने चेलों को प्रोत्साहन देते हुए यीशु ने कहा, ''**क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा, और उसके पास बहुत हो जाएगा; पर जिसके पास कुछ नहीं है, उससे जो कुछ उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा**'' (देखें 25:29; मरकुस 4:25; लूका 8:18; 19:26)। प्रभु के दृष्टांतों के वचन को समझने वालों को आत्मिक सच्चाइयों की और भी गहरी समझ दी जानी थी। किसी प्रकार की आत्मिक समझ न रखने वालों ने उसके दृष्टांतों के अर्थों को नहीं समझना था। वे समझ तो सकते थे, पर उन्होंने न समझने को चुना था। इस कारण यीशु ने कहा कि वह आत्मिक ज्ञान जो उनके पास था, उनसे ले लिया जाना था।

आयतें 13-15. यीशु **दृष्टातों में** बातें करता था ताकि उस का संदेश उनसे छिपा रहे जो उसे ग्रहण नहीं करना चाहते थे। उनके कठोर मनों ने उन्हें उसके संदेश को समझने से दूर रखा। हमारे उद्धारकर्त्ता ने अपने संदेश को स्वीकार करने की इस अनिच्छा को **यशायाह की भविष्यवाणी** के पूरा होने के रूप में देखा। उस ने सप्तति अनुवाद के शब्दों का इस्तेमाल करते हुए यशायाह

6:9, 10 में से दोहराया (देखें यूहन्ना 12:39–41; प्रेरितों 28:25–27)।

वे चाहे **सुनते** तो थे पर **समझते नहीं** थे; **देखते** तो थे पर उन्हें **सूझता नहीं** था। मूल वाक्य में (भविष्यवाणी करने के लिए यशायाह को कहने के संदर्भ में) यशायाह के समय के लोगों का वर्णन था, पर निश्चय ही यह उन पर लागू हुआ, जिनसे यीशु बात कर रहा था। समस्या यह थी कि उन्होंने परमेश्वर के वचन को बार-बार सुना, परन्तु वे सुनकर तंग हो गए थे और उन्होंने इसे समझने के लिए अपने मनों को खोलना नहीं था। उन्होंने सच्चाई को सुनने से **कान** बन्द कर लिए थे और **अपनी आंखें मूंद ली** थीं ताकि उन्हें इसका अर्थ दिखाई न दे। उनके विद्रोह ने परमेश्वर को उन्हें क्षमा करने के लिए रोक दिया।

आयत 16. लोगों की भीड़ के विपरीत, चेलों ने आत्मिक सच्चाइयों के लिए अपने मन खोल दिए थे। परिणाम यह हुआ कि यीशु ने उनके लिए आशिषों की घोषणा कर दी: "**पर धन्य हैं तुम्हारी आंखें; तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं**।" उनके मन उसे ग्रहण करने वाले थे, इस कारण उन्होंने यीशु द्वारा बताई हुई सच्चाइयों को सुना भी और देखा भी। परन्तु वे भी कई बार समझने में ढीले होते थे (15:15, 16)।

आयत 17. पुराने नियम के **भविष्यवक्ताओं** ने भविष्य की कई महत्वपूर्ण घटनाओं की भविष्यवाणी की थी, पर यह पक्का नहीं है कि उन्हें उन भविष्यवाणियों की समझ थी या नहीं। उदाहरण के रूप में, दानिय्येल उस सब को देखकर जो उसे दिखाया गया था, उलझन में पड़ गया था (दानिय्येल 9:1–27), सो उस ने परमेश्वर से प्रार्थना की। दानिय्येल की प्रार्थना के उत्तर में, जिब्राइल को "[उसे] बुद्धि और प्रवीणता देने को" भेजा गया था (दानिय्येल 9:22)। भविष्यवक्ताओं की उन सब को जो इस समय चेलों को मिल रहा था **देखने** और **सुनने** की बड़ी **इच्छा थी**। पतरस ने लिखा है:

> इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यवक्ताओं ने बहुत ढूंढ़-ढांढ़ और जांच-पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यवाणी की थी। उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा, जो उनमें था, और पहिले ही से मसीह के दुखों की और उनके बाद होने वाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था। उन पर प्रकट किया गया कि वे अपनी नहीं वरन तुम्हारी सेवा के लिए ये बातें कहा करते थे, जिनका समाचार अब तुम्हें उनके द्वारा मिला, जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया: तुम्हें सुसमाचार सुनाया, और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं (1 पतरस 1:10–12)।

यीशु के दृष्टांतों और अन्य शिक्षाओं के द्वारा प्रेरित उन सच्चाइयों को जान रहे थे, जो भविष्यवक्ताओं के ऊपर प्रकट नहीं की गई थीं। अन्त में कलीसिया की स्थापना से स्वर्गदूतों पर "परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान" प्रकट कर दिया गया (इफिसियों 3:8–12)। ("भविष्यवक्ताओं" को **धर्मियों** से मिलाने के लिए, 10:41 पर टिप्पणियां देखें।)

दृष्टांत-इसकी व्याख्या (13:18-23)

**18"अब तुम बोनेवाले के दृष्टांत का अर्थ सुनो: 19जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं
समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे वह दुष्ट आकर छीन ले जाता है; यह
वही है, जो मार्ग के किनारे बोया गया था। 20और जो पथरीली भूमि पर बोया गया, यह
वह है, जो वचन सुनकर तुरन्त आनन्द के साथ मान लेता है। 21पर अपने में जड़ न रखने
के कारण वह थोड़े ही दिन का है, और जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है, तो
तुरन्त ठोकर खाता है। 22जो झाड़ियों में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनता है, पर
इस संसार की चिन्ता और धन का धोखा वचन को दबाता है, और वह फल नहीं लाता।
23जो अच्छी भूमि में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनकर समझता है, और फल
लाता है; कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना।"**

आयत 18. अकेले में यीशु ने चेलों को **बोने वाले के दृष्टांत** का अर्थ समझाया (13:10 पर टिप्पणियां देखें)। उस ने उन्हें ध्यान से सुनने के लिए ज़ोर दिया क्योंकि, यूनानी धर्मग्रंथ में मूलतया केवल "**सुनो**" के बजाय *"तुम सुनो"* कहा गया है। अपने मनों के खुले होने के कारण उन्होंने समझ सकना था।

इस दृष्टांत में बोने वाला कौन है ? पहला उत्तर तो है "यीशु।" इस अध्याय में आगे मिलने वाले जंगली बीज के दृष्टांत में, यीशु ने कहा, "अच्छे बीज का बोने वाला मनुष्य का पुत्र है" (13:37)। राज्य के बीज को आरम्भ में बिखेरने वाला वही था, तौभी उस ने सीमित आज्ञा देकर और अन्त में "सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार का प्रचार" करने का अपने चेलों को आदेश दिया (मरकुस 16:15)। इसलिए बोने वाला कोई भी चेला हो सकता है जो संदेश को फैलाने में लगा हुआ हो।

इस दृष्टांत में बीज को कैसे देखा जाता है ? मत्ती के विवरण में "[राज्य का] वचन" कहा गया है (13:19-23), जबकि लूका का विवरण लिखता है कि "बीज परमेश्वर का वचन है" (लूका 8:11)।

दृष्टांत में मुख्य भूमिका भूमियों की है। वे अलग-अलग सुनने वालों या मनों का प्रतीक हैं। इसे चाहे "बोने वाले का दृष्टांत" नाम दिया जाता है, परन्तु कहानी में वास्तविक बल उन भूमियों पर जो वचन को ग्रहण करती हैं। बोए गए वचन को अलग-अलग तरह से स्वीकार किया जाता है और इसे ग्रहण करने के अलग-अलग परिणाम हैं।

आयत 19. पहले, **मार्ग के किनारे** गिरा **बीज** (देखें 13:4) बिना तैयारी वाली और कठोर भूमि पर गिरा, जिस कारण यह उसके अन्दर नहीं जा पाया। यह बीज भोजन की तलाश में पक्षियों की नज़र में भूमि के ऊपर पड़ा रहा, और जल्द ही इसे खा लिया गया। दिक्कत बीज की नहीं थी, वह तो अच्छा था, लेकिन दिक्कत जमीन की थी। यह ज़मीन उन लोगों को दर्शाती है जो "**राज्य का वचन सुनकर नहीं समझते**।" ये लोग नहीं समझते हैं क्योंकि पक्षी की तरह (13:4), उस बीज के जड़ पकड़ने से पहले ही **वह दुष्ट आकर छीन ले जाता है**।

"दुष्ट" बिना किसी संदेह के शैतान है। उसे बाइबल के बाहर के यहूदी लेखों में कष्टदायक पक्षियों के साथ मिलाया गया है: एक घटना में, उसके पक्षियों को "पृथ्वी पर बोए जाने वाले

बीज को खाने'' के लिए भेजते हुए बताया जाता है ताकि मनुष्य जाति को इसकी फसल न मिल पाए। ''बीज में उनके हल चलाने से पहले ही कौवों ने इसे भूमि पर से चुग लिया।''[5]

लोगों के मनों में से परमेश्वर के वचन को छीनने के शैतान के पास कई तरीके हैं। पौलुस ने कहा कि ''उन अविश्वासियों के लिए, जिनकी बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके'' (2 कुरिन्थियों 4:4)। परमेश्वर के लोगों को शैतान के हथकंडों से अनजान नहीं रहना चाहिए (2 कुरिन्थियों 2:11; इफिसियों 4:27; 2 तीमुथियुस 2:26; 1 पतरस 5:8; 1 यूहन्ना 2:14-17)।

आयतें 20, 21. दूसरा, यीशु ने समझाया कि जो **पथरीली भूमि पर** गिरा **बीज** था (देखें 13:5) उससे क्या अभिप्राय था। यह भूमि ऐसे व्यक्ति को दिखाती है, जो संदेश को **तुरन्त आनन्द के साथ मान लेता है**। तौभी बीज जल्दी से मर जाता है, क्योंकि **जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है**, तो ऐसा व्यक्ति **ठोकर खाता है**। ''ठोकर खाता है'' की जगह REB में कहा गया है कि उस व्यक्ति में ''खड़ा होने की सामर्थ नहीं है।'' लूका 8:13 कहता है कि वह केवल ''थोड़ी देर तक विश्वास'' करता है। ऐसे सुनने वाले की सबसे बड़ी समस्या यह है कि उस का विश्वास ऊपर-ऊपर से है। तेज धूप से दिखाए गए क्लेश या सताव के पहले निशान पर ही (13:6) वह मुरझा जाता है। आर. टी. फ्रांस ने कहा है कि यह ''धीरे-धीरे दिलचस्पी का खोना नहीं, बल्कि दबाव में ढह जाना है।''[6]

आयत 22. तीसरा, **झाड़ियों में बोया गया वचन** था (देखें 13:7)। यह भूमि उन लोगों को दर्शाती है, जो परमेश्वर के वचन को सुनते तो हैं पर **इस संसार की चिन्ता और धन के धोखे** से इसे दब जाने देते हैं। जिस कारण उनके आत्मिक जीवन **फल नहीं** लाते। लूका में यीशु ने कहा कि ऐसे लोगों का ''फल नहीं पकता'' (लूका 8:14)। ''इस संसार की चिन्ता'' और ''धन का धोखा'' पर यीशु द्वारा पहाड़ी उपदेश में इकट्ठे चर्चा की गई है (6:19-34)। मसीह के अनुयायियों को अपना ध्यान उन चीज़ों से हटाने के लिए जो सदाकाल के लिए हैं, इस जीवन की थोड़ी देर की चीज़ों को आड़े नहीं आने देना चाहिए। जीवन की परेशानियों से परेशान होना और धन का पीछा करने में फंस जाना आसान है। धन धोखेबाज है, क्योंकि यह उससे बढ़कर देने की प्रतिज्ञा करता है, जो यह दे सकता है और लोगों को परमेश्वर को भुलाने को कहता है, जो हर प्रकार के धन का देने वाला है (व्यवस्थाविवरण 8:11-20; नीतिवचन 30:7-9; सभोपदेशक 2:4-11; लूका 12:13-34; 1 तीमुथियुस 6:17-19; इब्रानियों 13:5, 6)।

आयत 23. चौथा, **अच्छी भूमि में बोया गया बीज** (देखें 13:8), उस व्यक्ति को दर्शाता है **जो वचन को सुनकर समझता है**। यीशु ने इन लोगों को ''भले और उत्तम मन'' वाले लोग बताया (लूका 8:15)। ये सुनने वाले ''वचन'' को केवल सुनते और समझते ही नहीं, बल्कि वे इसे अपने मनों में जड़ भी पकड़ने देते हैं। उनमें आत्मिक गहराई और स्थिरता है। वे जीवन की परेशानियों में अडोल रहते हैं। वे धन के लालच का सामना करते हैं, क्योंकि उन्हें सच्चे धन की कीमत पता है (देखें इब्रानियों 11:24-26)।

विश्वासयोग्य बने रहने वाले सुनने वाले **फल** भी **लाते** हैं। यीशु ने उस आत्मिक धैर्य पर ज़ोर दिया, जिसकी आवश्यकता है: यह ''[वचन को] सम्भाले रहते और धीरज से फल लाते''

(लूका 8:15)। अलग-अलग उपज, "**कोई सौ गुणा, कोई साठ गुणा, और कोई तीस गुणा,**" विश्वासियों की उपजाऊ सेवा को दर्शाता है। यीशु ने कहा, "जो मुझ में बना रहता है और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते" (यूहन्ना 15:5)। पौलुस का रूपक मसीही लोगों के मसीह के साथ विवाह का था ताकि वे "परमेश्वर के लिए फल लाएं" (रोमियों 7:4)। विवाह के सम्बन्ध का फल सन्तान होता है। जो लोग मसीह से ब्याहे गए हैं उन्हें परमेश्वर के लिए सन्तान उत्पन्न करनी चाहिए। मसीही लोगों के जीवनों में और फल भी हैं (देखें गलातियों 5:22, 23)। यदि कोई फल नहीं लाता, तो उसे वैसे ही फैंक दिया जाएगा, जैसे कटी हुई डाली के सूख जाने पर उसे आग में झोंक दिया जाता है (यूहन्ना 15:6)।

मसीही लोगों के लिए वचन को बोने वाले और फल के लिए प्रार्थना करने वाले लोग होना आवश्यक है। हमें बीज बोकर धीरज से परमेश्वर को अपना काम करने देना चाहिए।

❖❖❖❖❖ सबक ❖❖❖❖❖

राज्य का बीज बोना (13:1-9, 18-23)

यीशु ने बोने वाले के दृष्टांत में एक ढंग दे दिया कि उसके चेले किस प्रकार संसार में सुसमाचार को ले जा सकते हैं। बीज को एक जगह रखना अच्छा है, पर यह इसे "बिखरने" जितना प्रभावी नहीं है। यदि हम खुले मन से बीज को बो लेते हैं तो इसमें से बहुत सा अच्छी भूमि अर्थात भले मनों में जाकर गिरेगा, जिसका प्रभु के लिए बहुतायत से फल लाना पक्का है। यदि हम बीज बोते और पानी देते हैं तो फसल की ज़िम्मेदारी हमारी नहीं। पौलुस ने समझाया, "मैंने लगाया, अपुलोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया" (1 कुरिन्थियों 3:6)। परमेश्वर ने भी वायदा किया, "... मेरा वचन ... व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है वह उसे पूरा करेगा और जिस काम के लिए मैने उस को भेजा है, उसे वह सफल करेगा" (यशायाह 55:11)।

बोने और काटने का परमेश्वर का नियम कहता है कि हर प्रकार का बीज अपनी ही किस्म के अनुसार फल देगा (उत्पत्ति 1:11, 12)। जब हम किसी विशेष प्रकार का बीज बोते हैं, तो हम जानते हैं कि उससे किस विशेष प्रकार का फल निकलेगा। जो बात शारीरिक क्षेत्र में लागू होती है, वही आत्मिक क्षेत्र में भी होती है (देखें गलातियों 6:7-9)। जब आत्मिक बीज बोया जाता है तो आत्मिक फल ही मिलेगा। जब परमेश्वर का निरोल वचन बोया जाता है तो इसका फल मसीही और केवल मसीही लोग ही होंगे।

एक अर्थ में यीशु ने कहा, "जाओ सिखाओ, और बपतिस्मा दो, और कुछ और सिखाओ" (देखें 28:18-20)। हम दूसरों की आत्मिक गहराई के ज़िम्मेदार नहीं हैं, परन्तु हम बीज बोने की कोशिश करने के ज़िम्मेदार अवश्य हैं। यीशु ने बोया (7:29; मरकुस 1:27), और पौलुस ने इसकी आज्ञा दी (1 तीमुथियुस 4:16; 2 तीमुथियुस 3:16)।

अलग-अलग प्रकार की भूमि (13:1-9, 18-23)

यीशु के दृष्टांत की तरह सुसमाचार का बीज अलग-अलग प्रकार की भूमि के ऊपर गिरता है। भूमि अलग-अलग तरह के लोगों और परमेश्वर के वचन को उनके ग्रहण करने को कहा गया है।

कठोर भूमि (रास्ता)। सुसमाचार का बीज कुछ लोगों के कठोर मनों में घुस नहीं सकता। वे परमेश्वर की पवित्रता, अपने पाप की वास्तविकता और इसके परिणामों, मसीह के बलिदान की आवश्यकता और आने वाले न्याय की निश्चितता को समझ नहीं पाते। इसलिए सुसमाचार उनके किसी काम का नहीं।

पथरीली भूमि। और लोग तुरन्त सुसमाचार के बीज को बड़े आनन्द से ग्रहण कर लेते हैं; परन्तु जब विरोध होता है, तो वे जल्दी से मुरझाकर आत्मिक रूप में सूख जाते हैं। वे मसीह से मुंह मोड़कर संसार में वापस चले जाते हैं।

झाड़ियों वाली भूमि। सुसमाचार के संदेश को ग्रहण करने वाले लोगों की आत्मिक उत्पादकता को जीवन की ''झाड़ियों'' से दबाया जा सकता है। आज बहुत से मसीही लोग इसी श्रेणी में आते हैं। उनके जीवन कैरियर बनाने और व्यक्तिगत रुचियों से इतने भरे हुए हैं कि उनके पास आत्मिक विकास के लिए समय ही नहीं बचा। प्रार्थना, बाइबल अध्ययन, कलीसिया में जाना, लोगों से मिलना, प्रर्सनल इवैंजलिज्म और दूसरों की सेवा जैसी गतिविधियां सिकुड़कर रह गई हैं। परिणाम यह हुआ है कि वे प्रभु के लिए उनका फल न के बराबर है।

अच्छी भूमि। परमेश्वर के प्रति कोमल हृदय रखने वाले लोग आनन्द से सुसमाचार को ग्रहण कर लेते हैं। आत्मिक अनुशासन में वफ़ादारी से बने रहकर वे मज़बूत मसीही जड़ें कायम करते हैं, जो उन्हें सही ढंग से बढ़ने में सहायता करती है। परिणाम यह होता है कि वे प्रभु के लिए बहुत सा फल लाते हैं।

सारांश। हर किसी को अपने आप से पूछना चाहिए, ''मैं किस प्रकार की भूमि हूं?''; ''मुझे राज्य में और उपजाऊ बनने के लिए बदलने में क्या-क्या करना आवश्यक है?''

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]*जौंडरवन इलस्ट्रेशन बाइबल बैकग्राउंड कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002), 82 में माइकल जे. विलकिन्स, ''मैथ्यू।'' [2]क्रेग एस. कीनर, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 377. [3]जोसेफस ने कफ़रनहूम के आस-पास की भूमि की इसके उपजाऊपन के लिए प्रशंसा की। (जोसेफस *वार्स* 3.10.8.) [4]*सिबिलाइन ओरेकल्स* 3.263-64; *जुबिलीस* 24.15. [5]*जुबिलीस* 11.10, 11; देखें टालमुड *सन्हेद्रिन* 107ए। [6]आर. टी. फ्रांस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 219.